न्यायपालिका ही नहीं, जनता के विवेक की भी परीक्षा

अयोध्या मामला सिर्फ न्यायपालिका ही नहीं जनता के विवेक की भी परीक्षा है। इसलिए सुनवाई टलने पर न तो खुशी मनाने की जरूरत है और न ही दुखी होने की। अगर भारत के राजनेताओं में समन्वय और समाधान की बुद्धि होती और भारत के धर्माचार्यों में सद्भाव की समझ होती तो न तो यह मामला इतने लंबे समय तक खिंचता और न ही इस पर इतना विवाद और तनाव होता। सुनवाई शुरू होने के साथ मुस्लिम पक्ष के वकील राजीव धवन ने उचित आपत्ति उठाई और अच्छा हुआ कि न्यायमूर्ति यूयू ललित ने उस इशारे को समझकर अपने को उस संविधान पीठ से अलग कर लिया। धवन ने याद दिलाया था कि जस्टिस यूयू ललित इससे पहले बाबरी मस्जिद विध्वंस के आरोपी कल्याण सिंह के वकील रह चुके थे। अब 29 जनवरी को इस मामले की अगली सुनवाई होगी और तब तक नई बेंच बन जाएगी। बेंच के साथ एक और आपत्ति ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड से जुड़े जफरयाब जिलानी ने उसमें किसी मुस्लिम जज के न होने की उठाई थी लेकिन, उसे बोर्ड के पदाधिकारियों ने खारिज कर कहा था कि उन्हें न्यायपालिका पर पूरा विश्वास है। इसलिए पीठ के सदस्यों के बारे में अब कोई आपत्ति नहीं आनी चाहिए। एक और आपत्ति हिंदू महासभा की ओर से आई है। अदालत में हजारों पेज के दस्तावेजों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। महासभा चाहती है कि अदालत देख ले कि अनुवाद ठीक से हुए हैं या नहीं। हजारों पेज के दस्तावेज अरबी, फारसी, संस्कृत, उर्दू और गुरुमुखी में है। मुकदमा शुरू होने में जो देरी हुई है उसमें इनके अनुवाद का समय काफी कुछ जिम्मेदार है। निश्चित तौर पर यह इस देश का सबसे बड़ा मुकदमा है और संयोग से इसे भगवान राम और लोकतांत्रिक राजनीति से जोड़कर उसमें उलझन और चुनौती पैदा कर दी गई है। फैसला जो भी हो इससे राम की स्थिति पर नहीं उनके भक्तों की स्थिति पर ही फर्क पड़ेगा। इस मामले की सुनवाई को जिस तरह 2019 के चुनाव से जोड़ दिया गया है वह भी दुर्भाग्यपूर्ण है। इसलिए अगर इसमें देरी उचित नहीं है तो जल्दबाजी भी सही नहीं है। इस मामले से जुड़े संवैधानिक मूल्य सुप्रीम कोर्ट के हाथ में हैं और कोर्ट न्यायिक विवेक के सहारे। आशा की जानी चाहिए कि जो भी निर्णय आएगा उसे जनता सिर माथे पर रखेगी।

उदारवादी शिक्षा से ही मजबूत होगा लोकतंत्र

संदर्भ... सबको समायोजित करने और सामाजिक व सांस्कृतिक विरोधाभास मिटाने वाले मध्यमार्ग का निर्माण

गुरचरण दास
स्तंभकार और लेखक
gurcharandas@gmail.com

चुनावों की एक और शृंखला आकर चली गई, अब आम चुनाव की आहट है। किसी सर्जरी की तरह चुनाव नेताओं के दिमाग से सारे विचार निकालकर उनका फोकस आर्थिक व शासन संबंधी सुधारों के कठिन काम को भुलाकर लोकलुभावन कदमों व खैरात बांटने पर केंद्रित कर देते हैं। नतीजों ने दिखाया कि भारतीय स्वभाव से शक्की हैं और अपने नेताओं को बदलने में झिझकते नहीं। 2014 की विशाल निश्चितताओं की जगह अब 2019 के महान संदेह ने ले ली है।

प्राचीन काल से ही भारतीय मिज़ाज को अनिश्चितता से कोई दिक्कत नहीं रही है। इस मिज़ाज का उद्गम ऋग्वेद के ख्यात नासदीय सूक्त में ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर दुविधा में है, जिसमें 'नेति नेति' (यह नहीं, वह भी नहीं) की संदेहवादी अद्वैत पद्धति अपनाई गई। प्रश्न उठाने का हमारा मिज़ाज नागरिकता और लोकतंत्र निर्मित करने में एक ताकत है। दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा व्यवस्था प्रश्न पूछने की इस प्रवृत्ति को पोषित करने की बजाय रटने की पद्धति के माध्यम से इसे खत्म करती है। टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और 'उपयोगी विषयों' ने जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने वाली पुरानी शैली की उदार शिक्षा की जगह ले ली है। कुछ श्रेष्ठ, निजी उदार कला व विज्ञान संस्थान जैसे अशोका, क्रिया और अहमदाबाद यूनिवर्सिटी में ह्यूमैनिटीज इनिशिएटिव भविष्य की कुछ उम्मीद जगाते हैं। जब दुनियाभर में 'लिबरल' (उदार) शब्द बदनाम कर दिया गया है, यह याद रखना उचित होगा कि 'लिबरल' की जड़ें 'लिबर्टी' (स्वतंत्रता) में है। उदार शिक्षा किसी विषय विशेष में महारत की बजाय सीखने की पद्धति है। यह तर्क करना सिखाती है और व्यक्ति को खुद का आकलन करने का आत्मविश्वास देती है। उपनिषद की तरह यह भी प्रश्न पूछने पर निर्भर है। इसमें मूल पाठ को पढ़कर समूह में उस पर प्रश्न पूछना शामिल है। यह किसी छात्र के दिमाग में तथ्य उड़ेलने के एकदम विपरीत है।

उदार शिक्षा एक ऐसे मुक्त मानव-मात्र के लिए उचित है, जिसमें खुद पर शासन करने और सामूहिक स्व-शासन में भागीदार होने की क्षमता हो। चुनाव के वक्त यह योग्यता किसी धोखेबाज उम्मीदवार और समझदार व गंभीर प्रत्याशी के बीच फर्क करने में मददगार होती है। इस तरह यह नागरिकता निर्माण करने में मददगार है। हाल के चुनाव में यह कृषि ऋण माफी के विनाशक विचार का भंडाफोड़ कर देती, जो डिफाल्टर को पुरस्कृत करती है और ईमानदार किसानों को सजा देती है। राज्यों को दिवालिया करके वास्तविक कृषि सुधार के लिए कोई पैसा नहीं छोड़ती, वह अलग।

जब हम किसी चीज का अध्ययन सिर्फ उस चीज को जानने के लिए करते हैं तो इससे बचपन की हमारी मूल जिज्ञासा को मजबूती मिलती है और हमारी सभ्यता के प्रचीन संदेहवादी तेवर निर्मित करती है। उदारवादी शिक्षा से हमारे राजनीतिक विमर्श का स्तर बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है, जो हाल के वर्षों में बहुत नीचे गिर गया है। इसके लिए सभी राजनीतिक दल जिम्मेदार हैं। राहुल गांधी ने रफाल सौदे को लेकर लगातार 'चौकीदार चोर है' कहकर इसमें योगदान दिया। उन्होंने अपने उन पदाधिकारियों की भी निंदा नहीं की, जिन्होंने मोदी की मां की उम्र और पिता को लेकर घिनौने जातिगत आक्षेप लगाए। हालांकि, उन्हें श्रेय है कि एक पूर्व मंत्री द्वारा मोदी की पेशागत जाति का अपमानजनक उल्लेख करने पर उन्होंने उस नेता की ओर से माफी मांगी। पूर्व में सोनिया गांधी द्वारा 'मौत का सौदागर' का उल्लेख उतना ही असभ्य कहा जाएगा। भाजपा कोई बेहतर नहीं है। मोदी एक राजनीतिक वंश के बारे में असभ्य भाषा इस्तेमाल करने के दोषी हैं। गुजरात के मंत्री ने वर्गीस कुरियन पर अमूल के फंड्स ईसाई मिशनरियों को देने का झूठा आरोप लगाया। मोदी ने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बनाने वाले व्यक्ति पर लगाए आक्षेप की निंदा नहीं की। सारे दल खासतौर पर 'आप' और शिवसेना बार-बार विपक्षियों को बुरा-भला कहती हैं जैसे 'खिलजी की संतान'।

उदारवादी शिक्षा समुदाय में सम्मानजनक विमर्श व वार्तालाप की आदत निर्मित करने में फायदेमंद होती है। विरोधियों की जातीय पहचान पर अपमानजनक प्रहार पर उतारू होने की बजाय वह जायज जवाब खोजने के प्रति समर्पित होती है। यह राजनीति में धुर दक्षिण व धुर वाम विचारों की बजाय मध्यमार्ग की ओर ले जाती है? राजनीतिक मध्यमार्ग सबको समायोजित करता है, सामाजिक व सांस्कृतिक विरोधाभासों को मिटाता है तथा औसत मतदाताओं, खासतौर पर अल्पसंख्यकों को आकर्षित करता है। इसलिए भारत में स्वतंत्रता के बाद ज्यादातर चुनाव मध्यमार्गी प्रत्याशियों ने ही जीते। यहां तक कि 2014 की मोदी लहर भी मोदी द्वारा विकास व जॉब का मध्यमार्गी वादा करने का नतीजा था, जिसने महत्वाकांक्षी युवा मतदाताओं को आकर्षित किया। यह वादा पूरा नहीं हुआ, यह बिल्कुल अलग बात है और मोदी आज चिंतित नेता हैं।

आखिर में शिक्षा को उदारवादी ढंग से लेने से हम बेहतर मानव बनते हैं। यह हमें जॉब पाने और आजीविका कमाने की मांग से मुक्त करके अस्तित्वगत सवाल पर गौर करने की आज़ादी देती है कि हम कौन हैं और हम यहां क्यों हैं। इससे हमारा ध्यान खुद से हटकर दुनिया में हमारे स्थान पर आ जाता है। चरित्र बनाने के लिए 'खुद को भूल जाना' हमेशा अच्छा रहा है। जब इसे क्रिया और अनुभव से जोड़ा जाता है तो यह विवेक-बुद्धि (प्रोनेसिस) की ओर ले जाती है। जैसा अरस्तू ने कहा था- उचित व्यक्ति के साथ उचित समय पर, उचित तरीके से और उचित कारण से उचित व्यवहार करना ही विवेक बुद्धि है। लेकिन, कैसे कोई गरीब या मध्यम वर्गीय भारतीय परिवार अपने बच्चों को जॉब के लिए तैयार न करने का जोखिम ले सकता है? निश्चित ही चार वर्षीय अंडर ग्रेजुएट अमेरिकन लिबरल एजुकेशन ऐसी लग्ज़री है, जो ज्यादातर भारतीयों के बस के बाहर की बात है। वास्तव में ऐसा संभव है यदि आप उदारवादी शिक्षा को सामग्री की बजाय सीखने की पद्धति मानें। इसकी शुरुआत प्राथमिक विद्यालय में होना चाहिए और पोस्ट ग्रेजुएशन तक चलनी चाहिए। उदारवादी शिक्षा कोई उद्देश्य नहीं बल्कि युवाओं को समाज के विचारपूर्ण सदस्य बनाने का जरिया है। यह आजीविका कमाने या अच्छे नागरिक बनने से अलग नहीं है। यह तो हमें सिर्फ यह याद दिलाती है कि जीवन में उपभोग व उत्पादन करने से भी बहुत कुछ है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

परिवार में प्रेमपूर्ण माहौल से अशांति मिटाएं

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

वर्षों पहले एक विदेशी लेखक ने हमारे देश के लिए टिप्पणी की थी कि भारत ऐसा अमीर देश है जहां गरीब लोग रहते हैं। उसकी बात आज एक अलग ढंग से देखी और समझी जा सकती है कि भारत वह शांत देश है जहां अशांत लोग बसते हैं। अब यहीं से यह बात शुरू होती है कि आज एक आम भारतीय का मन अशांत है। खास भी शांत नहीं है। और इसीलिए देश अशांत नज़र आ रहा है। जबकि भारत के पास धरती का जो खंड है, हमारी धरती के नीचे-ऊपर जो ऊर्जा है वह दुनिया में कम मिलेगी। यहां कुछ ऐसा घटा है, कुछ लोग ऐसे गुजरे हैं इस धरती से जिन्होंने अपने तेज, अपनी ऊर्जा से इसे लबालब कर रखा है। लेकिन, चूंकि हम भारतीय इस समय अपने उद्देश्यों में दोहरा जीवन जी रहे हैं, इसीलिए अशांत हैं। यहां अच्छा तैराक डूब जाता है, जनता द्वारा चुने हुए लोग जनता को ही धोखा दे जाते हैं, बुरी नीयत वाले साधु बन रहे हैं, लूट के इरादे रखने वाले नेता बन गए..। ये सारे लोग भीतर से अशांत हैं और इनकी निगेटिव एनर्जी से इनके संपर्क में आने वाले भी अशांत हो जाते हैं। कुल-मिलाकर ऐसा लगता है हमारा परिवार, हमारा नगर, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र अशांत है, जबकि देश की धरती और परिवार के माहौल में आज भी शांति बसी हुई है। यदि आप कहीं चूक रहे हैं तो उसे ठीक से अपने भीतर उतारने में। अब भी मौका है, अशांत मन के लोग देश की गरिमा और परिवार के प्रेमपूर्ण वातावरण से अपने भीतर की अशांति मिटा सकते हैं..।

जीने की राह कॉलम पं. विजयशंकर मेहता जी की आवाज में मोबाइल पर सुनने के लिए टाइप करें JKR और भेजें 9200001164 पर

ग्रीन क्लाइमेट फंड जलवायु परिवर्तन से निपटने में नई शुरुआत

सेकंड आर्टिकल

एन्वायर्नमेंट

डॉ. सीमा जावेद
पर्यावरणविद और संचार रणनीतिकार
Twitter @seemajaved

वर्ष 2019 के आगाज़ के साथ हम जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एकजुट होकर नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। दुनिया के देश नीतिगत विकल्पों, अभिनव प्रौद्योगिकीय कदमों और प्रदूषणकारी तत्वों के उत्सर्जन में कमी लाने को तैयार हो गया है। इसके अलावा पर्यावरण अनुकूल अर्थव्यवस्थाएं बनाने में मददगार सर्वश्रेष्ठ पद्धतियों की ओर मिलकर कदम बढ़ा रहे हैं। इससे पहले दिसम्बर 2018 में पोलैंड के केटोवाइस में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन महासम्मेलन में ऐतिहासिक पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते को लागू करने के लिए लगभग 200 देशों के बीच सहमति बनी। इसके अनुसार ग्लोबल वार्मिंग को दो डिग्री सेल्सियस के प्री-इंडस्ट्रियल स्तर से नीचे रखा जाना है।

जहां तक भारत का सवाल है 2030 तक उसने 2005 के ग्रीन हाउस गैसों के स्तरों से उत्सर्जन की तीव्रता को 35 फीसदी कम करने और अपनी अक्षय ऊर्जा क्षमता का विस्तार करने का संकल्प पहले ही व्यक्त किया है। भारत ने अगले दस वर्ष में अपनी स्थापित विद्युत क्षमता का 56.5 फीसदी भाग अक्षय ऊर्जा से पूरा करने का लक्ष्य तय किया है। लेकिन जब विकासशील देश अपने विकास के शैशव काल में थे तब विकसित देशों ने अत्यधिक उत्सर्जन करके जलवायु परिवर्तन के संकट को दावत दी। इसीलिए अब तक जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए भारत-चीन जैसे विकासशील देश वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता के लिए विकसित देशों से ग्रीन क्लाइमेट फंड (जीसीएफ) की मांग करते आ रहे हैं।

इस समझौते के तहत लक्ष्य प्राप्ति के लिए अमीर देशों द्वारा 2020-2025 तक 100 अरब डॉलर की राशि भुगतान करने का प्रावधान है। पहली बार कई विकसित देशों ने विकासशील देशों को वित्तीय सहायता का वचन दिया है। यह ग्रीन क्लाइमेट फंड की पहली औपचारिक पूर्ति की दिशा में महत्वपूर्ण सकारात्मक संकेत है, जर्मनी और नार्वे ने घोषणा की है कि वे अपने योगदान को दोगुना कर देंगे। जीसीएफ अनुकूलन कोष में कुल 12.9 करोड़ अमेरिकी डॉलर प्राप्त हुए। इस मौके पर विश्व बैंक ने 2021-2025 की अवधि के लिए 200 अरब डॉलर देने का संकल्प किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते का लक्ष्य हासिल होने से सिर्फ वायु प्रदूषण में कमी आने से दुनिया भर में 2050 तक 10 लाख लोगों की जान बच सकती है। अल्प कार्बन ऊर्जा स्रोतों को अपनाने से न सिर्फ वायु की गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि स्वास्थ्य संबंधी त्वरित फायदे के अतिरिक्त अवसर मिलेंगे। विशेषज्ञों के अनुमान से जो संकेत मिल रहे हैं, उससे जलवायु संबंधी कार्यों से जो स्वास्थ्य संबंधी लाभ होगा उसका मूल्य वैश्विक स्तर पर राहत संबंधी नीतियों की लागत का दोगुना होगा। ऐसे में विकसित देशों द्वारा जिम्मेदारी निभाने के लिए उठाए गए इस कदम से नए साल में जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने की राह खुली है और एक नए युग का आगाज़ हुआ है।

वेब भास्कर

फोटोग्राफी... हवाई का सबसे ऊंचा होनोकोहाऊ फॉल्स, 1119 फीट ऊंची इस पहाड़ी को आंसुओं की दीवार कहते हैं, यहां सिर्फ हेलिकॉप्टर से जा सकते हैं

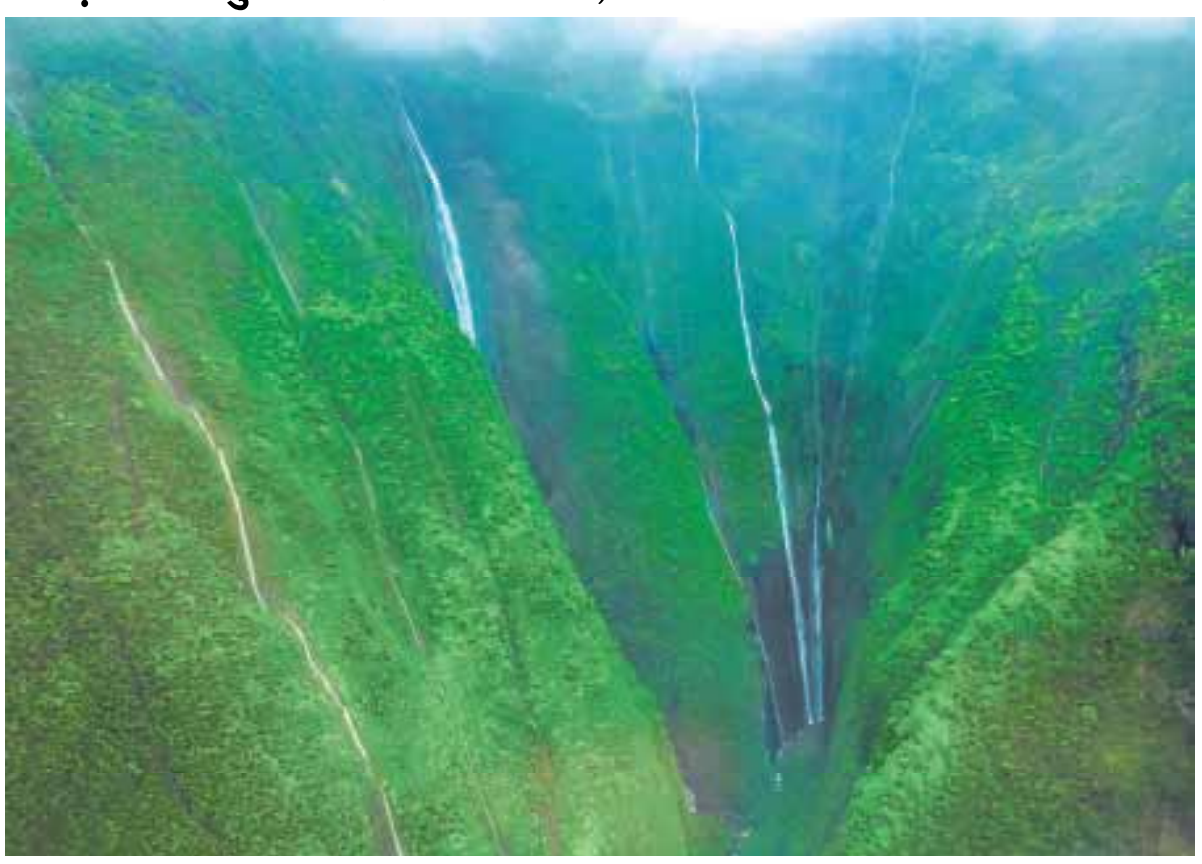

यह फोटो अमेरिका के माउ क्षेत्र में स्थित होनोकोहाऊ फॉल्स का है। करीब 1,119 फीट की ऊंचाई से गिरता यह झरना हवाई का सबसे ऊंचा झरना है। खास बात यह है कि यह टू-टीयर यानी दो स्तरों पर बना हुआ है। पहले यह पहाड़ की करीब आधी ऊंचाई तक एक पूल में गिरता है, उसके बाद पहाड़ से नीचे एक दूसरे पूल में गिरता है, वहां से यह सैकड़ों फीट नीचे एक खूबसूरत तालाब में गिरता है। पश्चिमी क्षेत्र में स्थित इस दुर्गम घाटी और पहाड़ों पर सिर्फ हेलिकॉप्टर से ही जा सकते हैं। यहां सालाना औसतन 9,820 मिलीमीटर बारिश होती है। पहाड़ी से गिरते कई झरनों की वजह से इसे 'वॉल ऑफ टीयर्स' यानी आंसुओं की दीवार भी कहा जाता है। इस प्राकृतिक आश्चर्य को हॉलीवुड फिल्म जुरासिक पार्क में भी दिखाया जा चुका है। • whenonearth.net

टॉप ऑन वेब • reddit

गूगल की 1.61 लाख करोड़ रुपए की टैक्स चोरी टॉप ट्रेंड में

दुनिया के सबसे बड़े सर्च इंजन गूगल की टैक्स चोरी का मामला दुनिया भर के मीडिया के अलावा हफ्ते भर से सोशल मीडिया पर भी टॉप ट्रेंड में है। हाल ही में एक नई रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि गूगल ने टैक्स चोरी से बचने के लिए 2017 में 23 अरब डॉलर यानी करीब 1.61 लाख करोड़ रुपए बरमूडा भेज दिए। इसके लिए गूगल ने शैल कंपनियों का इस्तेमाल किया। बरमुडा उत्तरी अटलांटिक महासागर में स्थित टैक्स-फ्री आइलैंड है। हालांकि यह ब्रिटिश प्रवासी क्षेत्र है लेकिन स्वतंत्र रूप से एक देश के रूप में शासित है। डच चैंबर ऑफ कॉमर्स को सौंपे दस्तावेज के अनुसार गूगल ने शेल कंपनी 'गूगल नीदरलैंड होल्डिंग्स बीवी' के जरिये रकम ट्रांसफर की। यह 2016 की तुलना में 4.5 अरब डॉलर ज्यादा है। गूगल ने इसके लिए टैक्स चोरी की अंतरराष्ट्रीय रणनीति इस्तेमाल की, जिसे 'डबल आयरिश, डच सैंडविच' के नाम से जाना जाता है। इन कंपनियों को आयरिश कंपनी के जरिये किसी डच कंपनी को और उससे बरमूडा जैसे टैक्स हैवन में अन्य आयरिश सहायक कंपनी तक मुनाफा भेजने की कानूनी इजाजत देती है।

डच सहायक कंपनी ने, कंपनी की अमेरिका के बाहर अर्जित रॉयल्टी को गूगल आयरलैंड होल्डिंग्स को स्थानांतरित किया। आयरलैंड होल्डिंग्स बरमूडा की कंपनी है, जहां कंपनियां कोई आयकर नहीं देती हैं। इस कदम से गूगल को अमेरिका में इनकम टैक्स चुकाने से मुक्ति मिली। साथ ही उसे यूरोपीय निधियों पर भी कर देने से राहत मिल गई।

80,282

ट्रेंडिंग प्वाइंट्स और 91% अपवोटिंग के साथ यह पोस्ट शीर्ष पर है। इस पर 5,146 लोगों ने कमेंट भी किए हैं। इसे दो हजार बार से ज्यादा शेयर किया गया है।

नॉलेज भास्कर

निवेश के टिप्स
रिटायरमेंट पोर्टफोलियो

सेवानिवृत्ति के बाद निवेश के तरीके का महत्व बढ़ जाता है। तब इसका उद्देश्य महंगाई के असर को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त और नियमित आय होता है। ऐसे में बाजार से जुड़े अधिक जोखिम के निवेश की बजाय स्थिर दर से रिटर्न देने वाला निवेश ज्यादा उचित है।

सेवानिवृत्ति के बाद फिक्स्ड रेट निवेश बढ़ाएं

अजय केडिया, एमडी, केडिया एडवाइजरी, मुंबई

आपका रिटायरमेंट पोर्टफोलियो काफी विस्तृत और अच्छी तरह संतुलित होना चाहिए। इससे यह आपके और आप पर निर्भर साथी के जीवनकाल तक काम आ सकेगा। आपके पास विभिन्न फाइनेंशियल असेट्स हो सकती है जैसे शेयर, सोना, बॉन्ड, जीवन बीमा, पूंजीगत निवेश से मिलने वाला रिटर्न, म्यूचुअल फंड, फिक्स्ड डिपॉजिट, कंपनी डिपॉजिट, पीपीएफ, मासिक आय योजना, नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट आदि। लेकिन, आप कैसे यह सुनिश्चित कर सकते हैं आपके पोर्टफोलियो में इतने कंपोनेंट हैं, जो आपकी सेवानिवृत्ति बाद की सारी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त हो सकती हैं? आइए रिटायरमेंट पोर्टफोलियो बनाने के पहले विभिन्न पहलुओं की समीक्षा करें।

जोखिम को लेकर आपका रवैया : सामान्यतः हमारे सामने दो प्रकार के निवेशक आते हैं :

1. जोखिम लेने वाले : ये अपने निवेश पर ऊंचा रिटर्न पाने के लिए ऊंचा जोखिम लेने को तैयार रहते हैं। उनके पोर्टफोलियों में इक्विटी, म्यूचुअल फंड की ग्रोथ स्कीम्स, यूनिट लिंक्ड प्लान, पूंजीगत निवेश पर मिलने वाला सालाना रिटर्न, रियल एस्टेट और दीर्घावधि के डिपॉजिट होते हैं।

2. जोखिम विरोधी : आमतौर पर बड़ी संख्या में लोग जोखिम विरोधी होते हैं। वे न्यूनतम जोखिम के साथ अपने पोर्टफोलियों पर रिटर्न को अधिकतम संभव दर तक ले जाना चाहते हैं। उनके पोर्टफोलियों में छोटा हिस्सा इक्विटी और म्यूचुअल फंड की ग्रोथ स्कीम के लिए होता है, जबकि बड़ा हिस्सा कम या मध्यम जोखिम वाली असेट में लगा होता है। उनके निवेश अल्पावधि के डिपॉजिट, फिक्स्ड/परिवर्तनीय एन्युइटीज, सरकारी बॉन्ड, म्युचुअल फंड यूनिट या मासिक आय योजना शामिल है।

थम्ब रूल : इस तरह तय करें अपने निवेश पोर्टफोलियो का मिश्रण

आपकी उम्र	फिक्स्ड दर वाले निवेश	बाजार से जुड़े निवेश
20-30	20-30%	70-80%
30-40	30-40%	60-70%
40-50	40-50%	50-60%
50-60	50-60%	40-50%
60-70	60-70%	30-40%
70+	80+%	20% से कम

पोर्टफोलियो का सही मिश्रण कैसे तय करें? आप अपने फाइनेंशियल पोर्टफोलियो में जोखिमभरे असेट जोड़ने के लिए एक सामान्य थम्ब रूल अपना सकते हैं (यानी 100 मायनस उम्र)। रिटायरमेंट बहुत दूर हो तो संपत्ति इकट्ठी करने के लिए ज्यादा जोखिम लेना वांछनीय है लेकिन, जब व्यक्ति रिटायरमेंट के नज़दीक पहुंचता है तो उसे जोखिम टालने वाली निवेश रणनीति बनानी चाहिए। जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है फिक्स्ड रेट निवेश बढ़ना चाहिए और बाजार से जुड़े निवेश क्रमशः कम होने चाहिए।

पोर्टफोलियो में तरलता : जोखिम व रिटर्न के बाद पोर्टफोलियो की तरलता महत्वपूर्ण तत्व है, जिसका आपको पोस्ट रिटायरमेंट प्लानिंग में विचार करना चाहिए। तरलता का संबंध किसी असेट को खरीदने अथवा बेचने की क्षमता से होता है। प्रायः सोना, चांदी, आभूषण, हीरे जैसे कीमती रत्न, रियल एस्टेट, पेंटिंग्स, कार्विंग्स आदि जैसी मूर्त असेट को संरक्षित रखने के लिए उनके रखरखाव की लागत का प्रबंध सुनिश्चित करना होता है।

जीवन बीमा की समीक्षा : आप रिटायर हो भी जाएं तो भी आपको कई कारण से जीवन बीमा की जरूरत रहती है। एक महत्वपूर्ण कारण तो यह सुनिश्चित करना है कि यदि आप नहीं रहे तो आपके जीवनसाथी को पर्याप्त आमदनी होती रहे। कुछ पेंशन प्लान में पीछे बचे जीवनसाथी के लिए कम पेंशन या कुछ भी नहीं रहता। फाइनेंशियल प्लानर या बीमा विशेषज्ञ से राय लिए बीमा अपना जीवन बीमा बंद न करें। एक बार आप बीमा गंवा दें तो फिर बीमा करना कठिन या असंभव तक हो सकता है।

मेडिकल इमरजेंसी कवर : बढ़ती उम्र के साथ स्वास्थ्य समस्याएं और खर्च आता है, जो आपकी रिटायरमेंट बाद की आमदनी में नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसमें नाकाम रहने पर आपको ऐसे खर्च के लिए असेट बेचनी पढ़ सकती है। आपके पोर्टफोलियो में हेल्थ इंश्योरेंस यानी मेडिक्लेम, व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा, हॉस्पिटलाइजेशन पॉलिसी, गंभीर रोगों संबंधी पॉलिसी आदि होना चाहिए ताकि रिटायरमेंट के बाद अचानक आने वाला बड़ा खर्च घटाया जा सके। इसे जितना जल्दी हो ले लेना चाहिए क्योंकि ये बढ़ती उम्र के साथ महंगे होते जाते हैं।

नोट- निवेशकों को जोखिम लेने की क्षमता, रिटर्न, लिक्विडिटी और टैक्सेशन पर पूरी तरह सोच-विचार करने के बाद ही निवेश का फैसला करना चाहिए।

सच तो यह है

नेपोलियन बोनापार्ट छोटे कद का नहीं था

नेपोलियन के बारे में यह धारणा ज्यादा ही प्रचलित है कि वह नाटे या छोटे कद का था। यहां तक कि इतिहास की किताबों में उसे कम ऊंचाई वाला सेनापति लिखा गया है। लेकिन यह बात सच नहीं है। नेपोलियन की मौत के बाद एक फ्रांसीसी डॉक्टर ने उसकी हाइट 5 फीट 2 इंच दर्ज की थी। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय माप इकाइयों में यह 5 फीट 6.5 इंच (169 सेमी) के बराबर होती है। बीबीसी के अनुसार, 19वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश पुरुषों की औसत ऊंचाई लगभग 170 इंच या 5 फीट 5 इंच थी। इसका मतलब यह हुआ कि नेपोलियन भी 5 फीट 7 इंच के करीब था। भ्रम की स्थिति इसलिए बनी क्योंकि उसकी ऊंचाई अंग्रेजी इंच के बजाय फ्रेंच इंच का उपयोग करके मापी गई थी।

इतिहासकारों का मानना है कि नेपोलियन को नाटा बताने वाला जुमला शुद्ध रूप से अंग्रेजों द्वारा गढ़ा गया था या माप प्रणाली की एक गंभीर गलती के परिणामस्वरूप हुआ। उस काल में नेपोलियन अपने से अधिक हाइट वाले सैनिकों के बीच घिरा रहता था, ऐसा करना उसे पसंद था। इन्हीं लंबे कद के सैनिकों के बीच वह छोटे कद का दिखाई देता था। दिलचस्प बात यह है कि नेपोलियन के अंगरक्षक भी काफी हाइट वाले होते थे। वह जहां भी जाता था, इन लंबे अंगरक्षकों के बीच आम जनता को बौना ही दिखता था। ऐसी स्थिति में यही कहा जाने लगा कि नेपोलियन की हाइट कम थी। नेपोलियन औसत ऊंचाई का था, लेकिन उसकी युद्ध की रणनीति उसे शॉर्ट होने के लिए प्रतिष्ठा पाने में मदद करती थी।

स्रोत : rd.com, history.howstuffworks.com